वैज्ञानिक तकनीक से बढाया लाभ

नाथूराम चौधरी

गांव: नयारामा, जिला: जालौर (राजस्थान)

मोबाइल-97842977505

परम्परागत फसल का उत्पादन किसान के लिए घाटे का सौदा नहीं है। यदि किसान वैज्ञानिक तकनीक का समावेश कर फसलों का उत्पादन करता है तो लाभ सुनिश्चित है। इसके लिए किसान को फसल चक्र भी अपनाना होगा। बगैर फसल चक्र भूमि की उर्वरा कमजोर होती है। यह अनुभव है परम्परागत खेती में बीजीय मसाला और औषधीय फसल का उत्पादन करने वाले नाथूराम चौधरी के, जो सालाना 3-4 लाख रूपए का मुनाफा ले रहे है।

वैज्ञानिक तकनीक से बढ़ाया लाभ

राह के पत्थर से बढ़कर, कुछ नहीं है मंजिले, रास्ते आवाज देते है, सफर जारी रखो। अरंड़ी, जीरा और ईसबगोल जैसी फसल का उत्पादन कर सालाना 3-4 लाख रूपए की आमदनी लेने वाला यह किसान है नाथूराम चौधरी, जो 10वीं पास करने के साथ ही खेती से जुड गए। अब क्षेत्र के दूसरे किसानों को खेती में कुछ अलग करने की प्रेरणा दे रहे है। गौरतलब है कि इस किसान को कृषि विभाग द्वारा किसान मित्र भी नियुक्त किया हुआ है। पहले मैं भी परम्परागत कृषि तकनीक से फसल का उत्पादन लिया करता था। लेकिन, मुनाफा कम मिलता था। फिर, मुझे जानकारी मिली कि आकाशवाणी और टीवी पर कृषि कार्यक्रमों का प्रसारण होता है। इसके बाद मैने इन कार्यक्रमों को देखना और सुनना अपनी दिनचर्या में शामिल कर लिया। कृषि विज्ञान केन्द्र पर आयोजित होने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेना शुरू किया। परिणाम रहा कि उन्नत कृषि तकनीक फसलों की उपज बढ़ा रही है। पहले जहां सालाना एक से डेढ़ लाख रूपए की आय होती थी, अब बढ़कर 3-4 लाख रूपये सालाना हो चुकी है। गौरतलब है कि इस किसान के पास 30 बीघा कृषि भूमि है। इस पर अंरड़ी, जीरा, ईसबगोल, रायड़ा और गेहूं फसल का उत्पादन लेता है। बुवाई पूर्व बीज की एफआईआर करना मैं नहीं भूलता हूॅ। कृषि कार्य में मेरी रूचि को देखते हुए कृषि विभाग ने मुझे किसान

मित्र बनाया हुआ है। क्षेत्र में आयोजित होने वाले कृषि प्रशिक्षण में किसान को नई-नई बातों की जानकारी देना मुझे अच्छा लगता है। परम्परागत फसलों से आय बढने के बाद अब मैं उद्यानिकी फसलों की ओर रूख कर रहा हूँ।

सब्जी उत्पादन से आय

परम्परागत फसलों उत्पादन से मिलने वाली आय को शुद्ध मुनाफे के रूप में लेता हूँ। इसके लिए 1 बीघा क्षेत्र में प्याज, मिर्च, भिड़ी, पालक, हरी मिर्च सहित दूसरी सब्जियों का उत्पादन लेता हूँ। गांव से शहर की दूरी ज्यादा होने के चलते सब्जी का विपणन गांव में ही फेरी लगाकर कर रहा हूँ। सालाना 40-50 हजार रूपए की आय सब्जी उत्पादन से मिल रही है। गौरतलब है कि इस किसान के पास सिंचाई के लिए कुआं है। कुएं के जलस्तर में उतार-चढ़ाव को देखते हुए इस किसान ने जलहौज बनाया हुआ है। फव्वारा सिंचाई का उपयोग कर रहा है। अरंड़ी की फसल में ड्रिप का उपयोग करके भी इस किसान ने देखा है। लेकिन, अपेक्षित उत्पादन नहीं मिला। इसके चलते ड्रिप का उपयोग सब्जी फसल में कर रहा हूँ।

दुग्ध से घी

पशुधन में मेरे पास 6 भैंस है। प्रतिदिन 25 किलो दुग्ध का उत्पादन मिल रहा है। दुग्ध से क्रीम निकालने के बाद 10 रूपए प्रति किलों की दर से विपणन कर देता हूँ। क्रीम 200 रूपए प्रति किलो और क्रीम से बना घी 500 रूपए प्रति किलों की दर से विपणन कर देता हूँ। इस तरह पशुपालन से प्रतिमाह 15-20 हजार रूपए की आय मिल जाती है।

साभार हलधर टाइम्स। वर्ष 12। अंक 32। 12-18 जून 2017